भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली
पाक्षिक समाचार

सम्पर्क

खण्ड –XXV अंक–14 31 जुलाई, 2020

कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन्। इन्द्रियार्थान्विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते।।

जो मूढ़बुद्धि मनुष्य समस्त इन्द्रियों को हठपूर्वक ऊपर से रोककर मन से उन इन्द्रियों के विषयों का चिन्तन करता रहता है, वह मिथ्याचारी अर्थात् दम्भी कहा जाता है। **श्रीमद्भगवद्गीता 3/6**

प्रो. पी.वी.राव

सम्मेलन अनुभाग से प्राप्त विज्ञप्ति संख्या IITD/ICON/5(3)/2020/245096 दिनांक 21.7.2020 के अनुसार निदेशक महोदय ने **प्रो. पी.वी.राव**, यांत्रिक इंजीनियरी विभाग को 1 सितम्बर, 2020 से 2 वर्ष के लिए संकायाध्यक्ष (योजना) के रूप में नियुक्त किया है।

पुनर्नियुक्ति

स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IES1/2020/236047 दिनांक 27.5.2020 के अनुसार **प्रो. सुरेंद्र सिंह यादव** (प्रबंध अध्ययन विभाग) को संस्थान संविधि के पैरा 13 (2) के अनुसार वर्तमान शैक्षिक सत्र के अंत तक अर्थात् 30.6.2021 तक के लिए प्रबंध अध्ययन विभाग में प्रोफेसर के रूप में पुनर्नियुक्त किया गया है।

सेवानिवृत्तियाँ

संस्थान के निम्नलिखित संकाय एवं स्टाफ सदस्य अधिवर्षिता की आयु होने पर 31 जुलाई, 2020 को अपराह्न में संस्थान से सेवानिवृत्त हो रहे हैं :–

प्रो. सुरेंद्र सिंह यादव, प्रोफेसर, प्रबंध अध्ययन विभाग



प्रो. सुरेंद्र सिंह यादव ने सितंबर, 1997 में संस्थान के प्रबंध अध्ययन विभाग में सह प्रोफेसर के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। जुलाई, 2002 में आपको प्रोफेसर के पद पर नियुक्त किया गया। इसके बाद आपको एच.ए.जी. (HAG) दिया गया जो अगस्त, 2009 से प्रभावी हुआ।

प्रो. सुरेंद्र सिंह यादव ने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर से बी.टेक. की उपाधि प्राप्त की। FMS, दिल्ली यूनिवर्सिटी से आपने एम.बी.ए. की उपाधि तथा पैरिस यूनिवर्सिटी–1, सोरबोर्न, फ्रांस से प्रबंधन में पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की।

आपके रुझान क्षेत्रों में कारपोरेट वित्त, अंतरराष्ट्रीय वित्त तथा प्रतिभूति विश्लेषण एवं पोर्टफोलियो प्रबंधन शामिल रहे हैं। यह सभी क्षेत्र तथा सामान्य प्रबंधन आपके अनुसंधान के रुझान क्षेत्र रहे हैं।

अब तक आपने 23 शोध छात्रों का पर्यवेक्षण किया है। आपने 155 एम.बी.ए. मेजर प्रोजेक्ट्स तथा 24 माइनर प्रोजेक्ट्स का मार्गदर्शन किया है। वर्तमान में 8 शोध छात्र आपके मार्गदर्शन में अपना पीएच.डी. कार्य कर रहे हैं। आपने 300 से अधिक शोध पत्र लिखें जिनमें से 180 शोध पत्र प्रतिष्ठित भारतीय और विदेशी अनुसंधान जर्नलो, संपादित पुस्तकों में 5 चैप्टर तथा सम्मेलनों में 125 शोध पत्र रहे हैं। इसके अतिरिक्त आपने 25 से अधिक संपादकीय लिखें तथा वित्तीय/इकोनामिक समाचार पत्रों में आपके 03 दर्जन से भी अधिक लेख प्रकाशित हुए हैं।

वर्ष 2005 से आप एमराल्ड, यू. के. द्वारा प्रकाशित, JAMR (जर्नल ऑफ एडवांस इन मैनेजमेंट रिसर्च) नामक प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय पत्रिका के प्रमुख संपादक रहे हैं। इस पत्रिका ने अब तक अपनी प्रतिष्ठा में लगातार वृद्धि की है। इस पत्रिका का नवीनतम स्कोपस उद्धरण (cite) स्कोर 1.9 है। 2006–11 के दौरान आप अंतरराष्ट्रीय जर्नल ऑफ ग्लोबल बिजनेस एंड कॉम्पिटीटीवनेस (IJGBC) के भी प्रमुख संपादक रहे हैं तथा 2016–18 के दौरान आप हिंदी जर्नल "जिज्ञासा" के प्रमुख संपादक रहे हैं। आप फाइनेंस इंडिया, जर्नल ऑफ फाइनेंसियल मैनेजमेंट एंड एनालिसिस (JFMA), GIFT जर्नल आदि जैसे कई प्रतिष्ठित अनुसंधान जर्नलो के संपादकीय बोर्ड के सदस्य रहे हैं।

आपने स्प्रिंगर और मैकमिलन सहित अग्रणी प्रकाशकों के माध्यम से वित्त तथा प्रबंधन क्षेत्र में 14 पुस्तकें प्रकाशित की। इन पुस्तकों में कुछ टेक्स्ट बुक हैं और कुछ रिफरेंस (रिसर्च) बुक हैं।

आपने भारत तथा विदेशों के विभिन्न संस्थानों में व्याख्यान दिए तथा पिछले कई वर्षों से यूनिवर्सिटी ऑफ पेरिस 1 में प्रत्येक वर्ष अल्पावधि के लिए विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में जाते रहे हैं। आपको INSEEC पेरिस द्वारा तीन बार तथा John H Sykes कॉलेज ऑफ बिजनेस, यूनिवर्सिटी ऑफ टैम्पा, यू.एस.ए., द्वारा आमंत्रित किया गया।

वर्ष 2005 में आपको इंटरनेशनल बिजनेस होरिजन कॉन्फ्रेंस द्वारा 'एकेडमिक एक्सीलेंस अवॉर्ड' तथा 2013 में अमर उजाला बी–स्कूल एक्सीलेंस अवार्ड के अंतर्गत 'बेस्ट टीचर इन मैनेजमेंट' के अवार्ड से नवाजा गया। वर्ष 2017 में CII & ICI इंडेक्स के लिए भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली सूची में आपने दूसरा स्थान प्राप्त किया।

अनेक प्रायोजित अनुसंधान परियोजनाओं जैसे निजी संगठनों में वित्तीय प्रबंधन अभ्यास; दक्षिण–पूर्व एशिया में आर्थिक संकट; सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों में वित्तीय प्रबंधन अभ्यास; आर एंड डी प्रबंधन; वित्तीय क्षेत्र में कारपोरेट गवर्नेंस; ट्रांसफर–ऑपरेट– ट्रांसफर प्रबंधन; वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला के मुद्दे आदि का श्रेय आपको जाता है। आपने इंडिया टुडे ग्रुप, DRDO, कॉन्टिनेंटल कार्बन इंडिया लिमिटेड, प्रोजेक्ट एंड डेवलपमेंट इंडिया लिमिटेड, नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ कम्युनिकेबल डिजीज, NHAI, हरियाणा सरकार, बामर

लॉरी एंड कंपनी आदि के लिए परामर्श कार्य किए।

आपने कई वर्षों तक मैकमिलन इंडिया लिमिटेड के सहयोग से ऑनलाइन EDP भी आयोजित किए जिसमें शामिल प्रतिभागी अधिकांश बिजनेस संगठनों से संबंधित थे। नौसेना अधिकारियों के लिए क्रमिक रूप से चार वर्षों तक हर वर्ष किए गए MDP और कारपोरेट क्षेत्र के CIOs के लिए अल्पावधि MDP अत्यंत प्रशंसनीय रहे।

आपने संस्थान में विभिन्न प्रशासनिक उत्तरदायित्वो का निर्वहन किया। आप योजना प्रभारी (2003–04); अध्यक्ष, प्रबंध अध्ययन विभाग (2004–2010); मुख्य सतर्कता अधिकारी (2011–15) एवं 2015–18 के दौरान हिंदी कक्ष के अध्यक्ष रहे तथा कई नई गतिविधियों द्वारा विशेष योगदान दिया। आप कई वर्षों तक ग्रीवांस समिति, ओवर साइट समिति, निवेश समिति, 4 मेम्बर समिति, स्थाई समिति OCDC (समग्र पाठ्यचर्या विकास प्रकोष्ठ) जैसी समितियों के अध्यक्ष अथवा सदस्य रहे। आप कांसेप्ट पेपर समीक्षा समिति के संयोजक तथा संस्थान मैन्युअल अद्यतन समिति के अध्यक्ष रहे। आप 2 वर्षों के लिए प्रोफेसोरिअल समिति (मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग) के सदस्य रहे।

आप IIMs, IITs, IISc तथा विश्वविद्यालयों के पीएच.डी. थीसिस परीक्षक रहे। आपको UPSC, कॉमनवेल्थ फेलोशिप आदि की चयन समिति में विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित किया गया। इसके अतिरिक्त आप IIMs, IITs, दिल्ली विश्वविद्यालय आदि जैसे शैक्षिक संस्थानों में संकाय चयन में भी आपको विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित किया गया।

समिति सदस्य के रूप में आपने कई संगठनों में अपना योगदान दिया। आप बोर्ड ऑफ नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ फाइनेंस मैनेजमेंट (NIFM), MOF के सदस्य; वित्त समिति, राजीव गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (RGIPT) के सदस्य; RDC, UPTU, लखनऊ के संयोजक; सलाहकार समिति, NHB के सदस्य; FMS दिल्ली विश्वविद्यालय के सदस्य; DPR समिति, IIM शिलांग के सदस्य; अकादमिक काउंसिल परिषद, DTU के सदस्य; अनुसंधान परिषद, थापर विश्वविद्यालय के सदस्य; BOS, गुरु गोविंद सिंह इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय (GGSIP) के सदस्य आदि रहे हैं। प्रो. यादव, समाज में कमजोर/जरूरतमंदों की भी मदद करते रहे हैं।

अत्यंत मृदु एवं मितभाषी स्वभाव के प्रो. यादव अपने संकाय सहकर्मियों, स्टाफ सदस्यों एवं छात्रों के बीच अत्यंत लोकप्रिय रहे हैं।

प्रो. एस.एम.के. रहमान, सहायक प्रोफेसर, जैव चिकित्सा इंजी. केन्द्र



प्रो. एस.एम.के. रहमान ने 24.12.1979 को संस्थान में डिजाइन इंजीनियर के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। 31.3.1989 में आपको वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी एक के रूप में नियुक्त किया गया। 14.6.1990 में आपको वरिष्ठ डिजाइन इंजीनियर तथा 18.9.2013 में सहायक प्रोफेसर के रूप में पदोन्नत किया गया। आप अपने बी.टेक. के दिनों (1975 के बाद) से ही जैव चिकित्सा उपकरणों को डिजाइन तथा विकसित कर रहे हैं। आपने इंजीनियरिंग सेवाओं में कार्यभार ग्रहण नहीं किया तथा डिजाइन में रुचि लेते हुए उसका अनुगमन किया। अपने 45 वर्ष के कैरियर में आपने 25 परामर्श कार्य तथा तकनीकी जानकारियों का हस्तांतरण किया। आपने लगभग 24 शोध पत्र प्रस्तुत तथा प्रकाशित किए। आपने एक पीएच.डी., 20 एम.टेक. तथा 50 बी.टेक. परियोजनाओं का पर्यवेक्षण किया। संस्थान में तथा लगभग 50 प्रायोजित परामर्श कार्यों के लिए आपने बहुत से उपकरण विकसित किए। आपने प्रयोगशाला कक्षाएं लेने के साथ–साथ दर्जनों विभिन्न पाठ्यक्रम भी पढ़ाए। आपने एंबेडेड सिस्टम पर FITT पाठ्यक्रम में भी कक्षाएं ली। आप पांच पाठ्यक्रम अथवा प्रयोगशाला प्रतिवर्ष की औसत से 1995 से लगातार अध्यापन कार्य कर रहे हैं। मृदु स्वभाव के प्रो. रहमान अपने संकाय साथियों, स्टाफ सदस्यों तथा छात्रों के बीच अत्यंत लोकप्रिय रहे हैं।

श्री ऋषिपाल सिंह मान (25179), वरिष्ठ बागवानी अधीक्षक, निर्माण संगठन



श्री ऋषिपाल सिंह मान ने 16.8.1988 को संस्थान में बागवानी सहायक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। 1.9.1996 में आपको आर.सी.डी.एस. के अंतर्गत बागवानी सहायक के रूप में चयनित किया गया। 1.5.1998 को आर.सी.पी.एस. के अंतर्गत आपको बागवानी सहायक (S–15) के रूप में मैप तथा 1.9.2008 को इसी योजना के अंतर्गत वरिष्ठ बागवानी अधीक्षक के रूप में चयनित किया गया। 5.11.2016 को एम.ए.सी.पी. के अंतर्गत आपको लेवल–9 में उन्नयन दिया गया। श्री ऋषिपाल सिंह मान एक कर्मठ एवं कर्तव्यपरायण वरिष्ठ बागवानी अधीक्षक रहे है

सुश्री चंपा तिवारी (25456), अधीक्षक, अनुप्रयुक्त इलैक्ट्रॉनिक अनुसंधान केंद्र



सुश्री चंपा तिवारी ने 30.6.1983 को संस्थान में अवर श्रेणी लिपिक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। 22.6.1992 में आपको प्रवर श्रेणी लिपिक के रूप में नियुक्त किया गया। 1.5.1998 को आर.सी.पी.एस. के अंतर्गत आपको वरिष्ठ सहायक के रूप में मैप किया गया। 1.7.2004 को इसी योजना के अंतर्गत आपको कनिष्ठ अधीक्षक के रूप में पदोन्नत किया गया तथा 23.6.2012 को एम.ए.सी.पी. के अंतर्गत आपको उन्नयन दिया गया। 5.11.2016 को भर्ती नियमों के अंतर्गत आपको अधीक्षक के रूप में मैप किया गया। विनम्र स्वभाव की श्री चंपा तिवारी एक मेहनती एवं कर्तव्यपरायण अधीक्षक रही हैं।

श्री शिव कांत (26213), कनिष्ठ तकनीकी अधीक्षक, पदार्थ विज्ञान एवं इंजीनियरी विभाग



श्री शिव कांत न 16.11.1987 को संस्थान में प्रयोगशाला सहायक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। 1.12.1995 को आर.सी.डी.एस. के अंतर्गत आपको वरिष्ठ प्रयोगशाला सहायक के रूप में चयनित किया गया। 1.5.1998 को आर.सी.पी.एस. के अंतर्गत आपको वरिष्ठ प्रयोगशाला सहायक के रूप में मैप किया गया तथा 1.12.2007 को इसी योजना के अंतर्गत आपको कनिष्ठ तकनीकी अधीक्षक के रूप में पदोन्नत किया गया। 16.11.2017 को भर्ती नियमों के अंतर्गत आपको लेवल–8 में उन्नयन दिया गया। सौम्य स्वभाव के श्री शिव कांत एक कर्मठ एवं कर्तव्यपरायण कनिष्ठ तकनीकी अधीक्षक रहे है।

श्री सुनील कुमार वर्मा (25377), अधीक्षक, स्नातकोत्तर अध्ययन अनुभाग



श्री सुनील कुमार वर्मा ने 19.1.1979 को संस्थान में क्लास IV अटेंडेंट के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था।

19.12.1981 में आपको अवर श्रेणी लिपिक के रूप में नियुक्त किया गया। 7.6.1983 में आपको प्रवर श्रेणी लिपिक के रूप में नियुक्त किया गया। 1.7.1991 में आपको आर.सी.डी. एस. के अंतर्गत सहायक के रूप में चयनित किया गया जो 7.7.1992 से प्रभावी हुआ तथा सहायक (C/B) के रूप में पुनःपदनामित किया गया। 1.5.1998 में आर.सी.पी.एस. के अंतर्गत आपको कनिष्ठ अधीक्षक के रूप में मैप किया गया। 1.7.2003 को इसी योजना के अंतर्गत आपको अधीक्षक के रूप में पदोन्नत किया गया। 7.6.2013 को एम.ए. सी.पी.एस. के अंतर्गत आपको उन्नयन दिया गया। श्री सुनील कुमार वर्मा एक मेहनती एवं कर्तव्यपरायण अधीक्षक रहे हैं।

सुश्री बिमला पवार (25878), प्री प्राइमरी अध्यापिका (SS), नर्सरी स्कूल



सुश्री बिमला पवार ने 21.3.1983 को संस्थान में नर्सरी अध्यापिका के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। 1.4.1991 में आपको आर.सी. डी.एस. के अंतर्गत नर्सरी अध्यापिका ग्रेड–1 के रूप में चयनित किया गया। 1.5.1998 को आर.सी.पी.एस. के अंतर्गत आपको प्री प्राइमरी अध्यापिका (S-9) के रूप में मैप किया गया। 1.4.2003 को इसी योजना के अंतर्गत आपको प्री प्राइमरी अध्यापिका (SS) के रूप में अपवर्ड मूवमेंट किया गया। 21.3.2013 को एम.ए.सी.पी. के अंतर्गत आपको उन्नयन दिया गया। 5.11.2016 को भर्ती नियमों के अंतर्गत आपको प्री प्राइमरी अध्यापिका (SS) के रूप में मैप किया गया। स्नेही स्वभाव की सुश्री बिमला पवार एक कर्मठ एवं मेहनती प्री प्राइमरी अध्यापिका (SS) रही है।

श्री गोपी लाल बैरवा (50267), माली, बागवानी एकक



श्री गोपी लाल बैरवा ने 9.2.1983 को संस्थान में माली के रूप में ₹196–232 के वेतनमान में कार्यभार ग्रहण किया था। 1.3.1988 में आपको 800–1150 (संशोधित 2650–4000) रुपए का वेतनमान दिया गया। 1.3.1996 को आर.सी.डी.एस. के अंतर्गत आपको ₹950–1400 (संशोधित 3050–4590) का वेतनमान तथा छठे केंद्रीय वेतन आयोग के अनुसार 5200–20200 + ₹1900 का ग्रेड वेतन दिया गया। 1.3.2008 को आर.सी.पी. एस. के अंतर्गत आपको ₹5200–20200 + ₹2400 का ग्रेड वेतन दिया गया। 5.11.2016 को भर्ती नियमों के अंतर्गत आपको माली के रूप में मैप किया गया। 1.3.2018 को एम.ए.सी.पी के अंतर्गत ₹5200–20200 + ₹2800 रुपए का ग्रेड वेतन तथा सातवें केंद्रीय वेतन आयोग के अनुसार वेतन मैट्रिक्स का लेवल–5 दिया गया। श्री गोपी लाल बैरवा एक मेहनती एवं कर्तव्यपरायण माली रहे हैं।

श्री नवाब सिंह (50525) सुरक्षा गार्ड, सुरक्षा एकक



श्री नवाब सिंह न 27.6.1985 को संस्थान में सुरक्षा गार्ड के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। आपको 800–1150 (संशोधित 2650–4000) रुपए का वेतनमान दिया गया। 1.7.1993 को आर.सी.डी.एस. के अंतर्गत आपको ₹950–1400 (संशोधित 3050–4590) का वेतनमान दिया गया। 1.7.2003 को एम.ए.सी.पी.एस. के अंतर्गत आपको ₹4000–6000 का वेतनमान तथा छठे केंद्रीय वेतन आयोग के अनुसार ₹5200–20200 + ₹2400 का ग्रेड वेतन दिया गया। 1.7.2013 को एम.ए.सी.पी के अंतर्गत ₹5200–20200 + ₹2800 रुपए का ग्रेड वेतन तथा सातवें केंद्रीय वेतन आयोग के अनुसार वेतन मैट्रिक्स का लेवल–5 दिया गया। श्री नवाब सिंह एक सर्तक,मेहनती एवं कर्तव्यपरायण सुरक्षा गार्ड रहे हैं।

श्रीमती राधा (50717), आया, नर्सरी स्कूल



श्रीमती राधा ने प्रारम्भ से ही भा.प्रौ.सं. दिल्ली के नर्सरी स्कूल में आया के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। श्रीमती राधा संस्थान नियमावली 13(2) के अनुसार अधिवर्षिता पर संस्थान सेवा से सेवानिवृत्त हो रही हैं। ममतामयी स्वभाव की श्रीमती राधा एक मेहनती एवं कर्मठ आया रही हैं।

संस्थान समुदाय उपरोक्त संकाय/स्टाफ सदस्यों को भावभीनी विदाई देते हुए उनके व उनके परिवार के लिए सुख, समृद्धि एवं शांतिमय जीवन की कामना करता है।

प्रेमचंदः गांधी के साथ–साथ

प्रेमचंद गांधी के साथ–साथ चल रहे हैं–लेख में, पत्र में, उपन्यास में और कहानी में भी। गांधी जी के स्वराज्य आंदोलनों, घटनाक्रमों तथा विचारों ने उनकी अनेक कहानियों की आधारभूमि तैयार की है। प्रेमचंद हिंदी के एकमात्र ऐसे कहानीकार है जिनकी लगभग 25 कहानियां प्रत्यक्षः गांधी–दर्शन एवं गांधी–आंदोलनों आदि पर मिलती हैं और वे 1921 से उनके अंतिम समय तक मिलती हैं। इन कहानियों में गांधी –संघर्ष एवं गांधीवाद की जीवंत अनुभूतियां हैं जो एक प्रकार से प्रेमचंद को गांधीवाद का साहित्यिक संस्करण बना देती है। गांधी जी अपने स्वराज्य आंदोलनों से जनता में स्वाधीनता एवं रामराज्य की महत् चेतना उत्पन्न कर रहे थे और प्रेमचंद उसमें तात्कालिक वास्तविक अनुभूतियों और संवेदनाओं संपूर्ण कथासूत्र पिरोकर अपने पाठकों को इस महायुद्ध के लिए तैयार कर रहे थे। जब राष्ट्रनायक और राष्ट्रलेखक एक साथ जुड़ते हैं तो मानो राम और तुलसीदास मिलकर 'श्रीराम चरितमानस' की रचना करते हैं और जब गांधी और प्रेमचंद में एकत्व होता है तो 'रंगभूमि', 'कर्मभूमि','गोदान' आदि उपन्यासों और 'लाल फीता', 'सुहाग की साड़ी', 'स्वत्व–रक्षा', 'मंदिर और मस्जिद', 'इस्तीफा', 'जुलूस', 'समर–यात्रा', 'जेल,' आखिरी हीरा', 'कातिल', 'रहस्य' आदि कहानियां पाठक के मन में दासतां से मुक्ति और स्वराज्य की प्राप्ति का महाभाव उत्पन्न करती हैं। इस प्रकार जब राष्ट्र–विचार एवं साहित्य का संगम होता है तो राष्ट्र का मंगल होने से कौन रोक सकता है।

हिंदी कथा विधा के शिखरपुरुष, विश्वविख्यात कथाशिल्पी प्रेमचंद के जीवन और साहित्य पर गांधीवादी दर्शन और वैचारिकी के गहन प्रभाव को रेखांकित कर रहे हैं प्रेमचंद साहित्य के समर्पित अध्येता और विशेषज्ञ.....।

गांधी जी के जन्म की 150वीं वर्षगांठ पर अनेक दृष्टियों से विचार हुआ है और वह क्रम अभी चल रहा है। अतः प्रेमचंद के जन्म–दिवस पर गांधी जी के साथ उनके संबंधों को देखना प्रासंगिक होगा कि गांधी–युग का एक महान हिंदी लेखक किस प्रकार तथा किन रूपों में गांधी के साथ–साथ चल रहा था।

बीसवीं शताब्दी के आरंभिक पांच दशकों तक गांधी जी भारत के एकमात्र ऐसे

महानायक थे जिन्होंने अपने विचार–दर्शन तथा कार्यक्रमों से एक ऐसी हलचल उत्पन्न की जिसके कारण टैगोर, टाल्स्टाय, बर्नार्ड शॉ, अल्बर्ट आईस्टीन जैसी महान प्रतिभाओं ने भी उनकी विशिष्टता को स्वीकार किया।

भारत में उस समय ब्रिटिश दासता के विरुद्ध तथा स्वाधीनता के लिए सर्वत्र लोकमानस में जागृति आ रही थी और उससे लेखक–समाज तथा पत्रकारिता भी प्रभावित हो रहे थे। प्रेमचंद के कहानी–संग्रह 'सोजे वतन' (1908) में इस देशप्रेम की अनुगूंज सुनाई पड़ती है और गांधी जी के जनवरी, 1915 में भारत स्थायी रूप से आने के बाद उन पर सन् 1916 में प्रकाशित पुस्तक 'कर्मवीर गांधी' की भूमिका में वे गांधी जी का अभिनंदन करते हुए लिखते हैं कि भारत में महात्मा गांधी के पदार्पण से हमारे राष्ट्रीय जीवन में एक अद्भुत स्फूर्ति, सजीवता एवं व्यावहारिक उद्योग का विकास हुआ है।

प्रेमचंद ने गांधी जी का साक्षात दर्शन असहयोग आंदोलन के दौरान 8 फरवरी, 1921 को गोरखपुर के गाजी मियां के मैदान में किया था जब वे असहयोग के लिए उपस्थित लाखों की भीड़ को सरकारी नौकरी, कॉलेज, विश्वविद्यालय आदि छोड़ने का आह्वान कर रहे थे। वे घर लौटे और पत्नी की सहमति से 15 फरवरी, 1921 को 20 वर्ष की सरकारी नौकरी से इस्तीफा दे दिया और महावीर प्रसाद पोद्दार के सहयोग से खादी भंडार खोला, चर्खे बनवाए, लेकिन उनके बस का व्यापार न था और वे व्यापार आदि छोड़कर एक महीने बाद ही 19 मार्च, 1921 को लमही गांव चले गए, लेकिन गांधी जी का साथ छूटा नहीं और वे जीवन और साहित्य दोनों में चलता रहा।

प्रेमचंद को गांधी जी से मिलने का अवसर वर्धा में मिला जब 'हंस' पत्रिका को गांधी जी ने अपनी देखरेख में लिया और 'हंस लिमिटेड' का रजिस्ट्रेशन हुआ। उनकी पत्नी शिवरानी देवी ने अपनी पुस्तक 'प्रेमचंदः घर में' विस्तार से इसका जिक्र किया है। प्रेमचंद ने अपने अनुभव के बारे में पत्नी से कहा, 'जितना मैं महात्मा जी को समझता था, उससे कहीं ज्यादा वे मुझे मिले। महात्मा जी से मिलने के बाद कोई ऐसा नहीं होगा जो बगैर उनका हुए लौट आए, या तो वे सबके हैं या वे अपनी ओर सबको खींच लेते हैं। मैं महात्मा गांधी को दुनिया में सबसे बड़ा मानता हूं। उनका उद्देश्य है कि मजदूर और काश्तकार सुखी हों, वे इन लोगों को आगे बढ़ाने के लिए आंदोलन चला रहे हैं। मैं लिखकर उनको उत्साह दे रहा हूं।

यहां यह उल्लेखनीय है कि विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार आंदोलन में शिवरानी देवी 9 नवंबर 1930 को पिकेटिगं करती हुई गिरफ्तार हुई, जबकि प्रेमचंद जेल नहीं गए, पर वे पत्नी से मिलने जेल गए और उन्होंने 11 नवंबर 1930 को एक पत्र लिखा, 'उसने हमें हरा दिया है। मैं अब अपनी आंखों में ही छोटा अनुभव करता हूं।' इस प्रकार पति–पत्नी दोनों गांधी जी के स्वराज्य आंदोलन में साथ–साथ चलते रहे।

प्रेमचंद की कथात्मक रचनाओं में गांधी जी की उपस्थिति उनके भारत आगमन से पहले ही दिखाई देती है और उनका यह कथन सच ही है कि वे गांधी जी के कुदरती चेले थे। गांधी जी के भारत आगमन से पहले गुलामी के अंधकार में सोए–दबे भारतीय समाज को जागृत करने का शंखनाद स्वामी विवेकानंद और स्वामी दयानंद के द्वारा हो चुका था। प्रेमचंद आर्य समाज के सदस्य बन चुके थे और उसका प्रभाव उनकी रचनात्मकता पर पड़ रहा था। 'सोजे वतन' की कहानियां अद्भुत राष्ट्रीय–सांस्कृतिक प्रेम की कहानियां हैं और 'दोनों तरफ से' कहानी (मार्च, 1911) में तो वे अछूतोद्धार की कहानी लिखते हैं। कहानी में ब्राह्मण जमींदार दलितों के बीच जाकर उनकी सामाजिक एवं आर्थिक उन्नति का कार्य करता है जिसे गांधी जी भारत लौटने पर 1915 के बाद शुरू करते हैं। इस प्रकार प्रेमचंद दलित चेतना के पहले कहानीकार बनते है।

असहयोग आंदोलन के दौरान प्रेमचंद अपने लेख 'स्वराज्य के फायदे' (जुलाई, 1921) में लिखते हैं कि महात्मा गांधी देश के भक्त हैं और परमात्मा ने उन्हें भारत का उद्धार करने क लिए अवतरित किया है। इसी वर्ष के अंत में उनका 'प्रेम श्रम' उपन्यास प्रकाशित हुआ जो विशुद्धतः गांधीवादी रचना है। इस उपन्यास की कहानी और पात्रों की संरचना गांधी जी के किसान, गांव, पश्चिमी सभ्यता, अहिंसात्मक सुधार, हृदय–परिवर्तन, ट्रस्टीशिप के विचारों के ताने–बाने से बुने गए हैं और कथा के पात्र प्रेमशंकर एवं मायाशंकर गांधी के विचारों को ही साकार करते हैं। 'रंगभूमि' (जनवरी, 1925) का नायक अंधा भिखारी सूरदास तो गांधी का ही प्रतीक है।

प्रेमचंद और गांधी में पश्चिमी सभ्यता, औद्योगीकरण, ईसाईकरण, अंग्रेजी साम्राज्यवाद, ग्राम्य–चेतना आदि में वैचारिक एकरूपता दिखाई देती है और प्रेमचंद कारखाने की स्थापना के विरुद्ध सूरदास द्वारा गांव की जमीन की रक्षा का संघर्ष चित्रित करते हैं जो गांधी के समान ही धर्म और नीति का सहारा लेता है।

इस प्रकार सूरदास का संघर्ष स्वभूमि, स्वराज्य तथा स्वसंस्कृति की रक्षा का संघर्ष बनता है और 'रंगभूमि' को महाकाव्यात्मक उपन्यास बना देता है। प्रेमचंद का 'कर्मभूमि' (सितम्बर, 1932) भी गांधी जी की स्वराज्य–दृष्टि और उनके व्यावहारिक कार्यक्रमों पर आधारित है। इस पर गांधी का नमक–कर कानून तोड़ना, नेताओं की गिरफ्तारी, गांधी इर्विन पैक्ट, किसानों का लगान–बंदी आंदोलन आदि घटनाओं का सीधा प्रभाव है। इसी कारण इसे 'गांधीवादी उपन्यास' या राजनीतिक उपन्यास कहा जाता है। 'गोदान' तो कृषि संस्कृति एवं कृषक जीवन की महागाथा है। गांधी और प्रेमचंद दोनों की चिंता गांव की मूल संस्कृति को बचाने की है, बस अंतर यह है कि गांधी ग्रामोत्थान एव रामराज्य की कल्पना करते रहे हैं और प्रेमचंद हमें गांव की जिंदगी के यथार्थ का साक्षात्कार कराते हैं।

गांधी और प्रेमचंद का साथ–साथ चलना हिंदी साहित्य में एक महान उपलब्धि का समय है। यह उपलब्धि मार्क्स और गांधी के संगम से संभव नहीं थी, क्योंकि कोई भी विदेशी विचार कुछ को प्रभावित कर सकता है, संपूर्ण जनता को नहीं। इस कारण भी प्रेमचंद गांधी के हमराही बनते हैं, क्योंकि वे मार्क्सराज नहीं रामराज्य चाहते हैं और राम भारतीय धर्म, संस्कृति, नीति, न्याय और सुशासन के प्रतीक हैं। गांधी के बाद हिंदी साहित्य ही नहीं, भारतीय साहित्य में ऐसा राष्ट्रीय–मानवीय संघर्ष एवं उत्कर्ष दिखाई नहीं देता तो इसका शायद यही कारण है कि उसके बाद कोई गांधी पैदा नहीं हुआ और इस कारण कोई प्रेमचंद भी नहीं बन पाया।

साभार –दैनिक जागरण
28, जुलाई, 2020

हिन्दी कक्ष द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित दूरभाषः EPABX 1772, 7144, 1242

मुद्रकः सागर प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स, नई दिल्ली। ई–मेलः sagarprinters@gmail.com